**AMOGHVARTA**

**ISSN : 2583-3189**

# बाल श्रमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन

**ORIGINAL ARTICLE**

**Authors**

**डॉ. (श्रीमती) शैलजा पवार,**
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय,
स्वामी श्री स्वरूपानंद सरस्वती महाविद्यालय, आमदी नगर, हुड़को, भिलाई, जिला–दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

**श्रद्धा भारद्वाज,**
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय,
जगदगुरू शंकराचार्य कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
आमदी नगर, हुड़को, भिलाई,
जिला–दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

## शोध सार

प्रस्तुत लघु शोध बाल श्रमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्या के अध्ययन एक सर्वेक्षण प्रकार का शोध है। दुर्ग जिले के भिलाई शहर के बाल श्रमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन किया गया। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य बाल श्रमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध कार्य में दुर्ग जिले के भिलाई क्षेत्र के बाल श्रमिक विद्यालयों को लिया गया। प्रश्नावली के आधार पर बाल श्रमिक विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिसमें कुल 80 विद्यार्थी हैं। प्रस्तुत अध्ययन में बाल श्रमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्या मापन हेतु स्वनिर्मित उपकरण शैक्षिक समस्या परीक्षण (2012) का उपयोग किया गया जिसका चयन उद्देश्य पूर्ण न्यादर्श विधि से किया गया। अध्ययन का परिणाम यह दर्शातें हैं कि बाल श्रमिक विद्यार्थियों में शैक्षिक समस्या पाया गया।

## मुख्य शब्द

बाल श्रमिक, विद्यार्थी।

## प्रस्तावना

शिक्षा निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली बालकेंद्रित है, मनुष्य प्राचीन काल से लेकर आज तक लगातार उन्नति कर रहा है, इस उन्नति का सारा श्रेय उनकी जिज्ञासु प्रवृत्ति को जाता है। जिज्ञासावश वह पक्षियों के आकाश में उड़ने का कारण जान पाया और धीरे–धीरे उसने भी आसमान छू लिया। इन सभी कल्पनाओं को वर्तमान रूप देने हेतु उसके साथ विज्ञान है।

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालक को स्वावलंबी बनाना है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति व्यवहारिक जीवन के समस्त आवश्यकताओं को पूरा कर सफल जीवन व्यतीत कर सकता है। अतः वर्तमान में सफल जीवन व्यतीत कर सकते है। सबसे महत्वपूर्ण समस्या जीविकोपार्जन की है, विद्यार्थियों का एक बहुत बड़ा भाग इसी उद्देश्य से शिक्षा ग्रहण करता है। किसी भी व्यक्ति की वास्तविक पूँजी उसकी शिक्षा होती है। समाज के कुछ व्यक्ति या व्यक्ति समूह अपनी आर्थिक, सामाजिक एवं पारिवारिक तथा व्यक्तिगत विवशताओं के कारण समाज के अन्य घटकों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में असमर्थ हैं। अतः इन समस्याओं के समाधान हेतु सरकार द्वारा अनेक कार्यक्रम बनाये गये, फिर भी यह कार्यक्रम सुचारु रुप से संचालित नहीं है।

विश्व 21वीं सदी में प्रवेश कर चुका है। आने वाली सदी की मनमोहक तस्वीरें पेश की जा रही है। नयी सदी की अर्थव्यवस्था को लेकर तरह–तरह के नियमों को जारी किया जा रहा हैं। अनेक योजनाओं और परियोजनाओं को आने वाली सदी में क्रियान्वित करने के लिये अंतिम रूप प्रदान किया जा रहा है। वास्तविकता यह है कि दुनिया के उन करोड़ों बच्चों के पास कोई भविष्य नहीं है, उनका बचपन अभावों और शोषण की कभी खत्म न होने वाली दास्तान है। ये शोषित और अपेक्षित बच्चे दुनिया के हर कोने में है। बालश्रम प्रत्येक राष्ट्र में एक सामाजिक समस्या के रूप में विद्यमान है। आज भी दुनिया के करोड़ों ऐसे बच्चे हैं जो पढ़ने लिखने के उम्र में मेहनत मजदूरी से जूझ रहे हैं।

## बाल श्रमिक

''बाल श्रमिकों को साधारण रूप में देखें तो वह बालक जो अर्थोपार्जन एवं जीवकोपार्जन के लिये श्रम करता है, बाल श्रमिक कहलाता है।''

## उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य था, बाल श्रमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्या का अध्ययन करना।

## परिकल्पना

$H_1$ बाल श्रमिक विद्यार्थियों में शैक्षिक समस्याएं पाई जायेगी।

## न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य की समष्टि भिलाई शहर के बाल श्रमिक विद्यालय थे। इस समष्टि में से भिलाई के संचालित बाल श्रमिक विद्यालय के 80 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

विभिन्न कार्यक्षेत्र व लिंग के अनुसार न्यादर्श की संख्या प्रदर्शित करती तालिका –

**तालिका 1**

| क्र. | विद्यालय के नाम | विद्यार्थियों की संख्या | | कुल योग |
|---|---|---|---|---|
| | | छात्र | छात्राएं | |
| 1 | ज्ञानोदय बालश्रम शाला, रूआबांधा बस्ती | 12 | 08 | 20 |
| 2 | आदर्श बालश्रम शाला, सांस्कृतिक भवन, रिसाली | 10 | 06 | 16 |
| 3 | मैत्री बालश्रम शाला, पुराना कैंटीन भवन मैत्री बाग, मरोदा | 08 | 04 | 12 |
| 4 | नवदीप बालश्रम शाला, स्टेशन मरोदा | 07 | 05 | 12 |
| 5 | जनसेवा बालश्रम शाला, कुम्हारी | 13 | 07 | 20 |
| | **कुल योग** | **50** | **30** | **80** |

*(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)*

## शोध उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया, इस प्रश्नावली का निर्माण अपने शोध निर्देशक के सहयोग से किया। मापनी के आधार पर हमने बाल श्रमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्या से संबंधित आंकड़े एकत्रित किए। उपकरण के चार उद्देश्य थे, जिसके अंतर्गत प्रश्नों की कुल संख्या 26 है। प्रत्येक क्षेत्र के अंतर्गत प्रश्न संख्या को चार क्षेत्र में बांटा गया–(1) आर्थिक कारण (2) सामाजिक एवं पारिवारिक समस्या (3) शैक्षिक समस्या (4) व्यक्तिगत समस्याएं। प्रत्येक कथन उत्तर के (√) तथा नहीं (X) में चिन्ह लगाना था।

प्रस्तुत अध्ययन में बाल श्रमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्या मापन हेतु श्रद्धा भारद्वाज एवं सुश्री शास्वती आचार्जी द्वारा स्वनिर्मित उपकरण शैक्षिक समस्या परीक्षण (2012) का उपयोग किया गया।

## प्रदत्त विश्लेषण

प्रस्तुत लघु शोध के प्रदत्त विश्लेषण हेतु काई स्क्वायर सांख्यिकी का उपयोग किया गया।

$H_1$ बालश्रमिक विद्यार्थियों में शैक्षिक समस्या पायी जायेगी।

बाल श्रमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्या का काई स्क्वायर मानः–

**तालिका 2**

| क्र. | समस्या | प्राप्त आवृत्ति | | काई स्क्वायर का मान | df | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | हॉ | नहीं | | | |
| 1 | शाला घर से दूर की समस्या | 49 | 31 | 4.05 | 1 | सार्थक नहीं P>0.01 |
| 2 | पढ़ाई में मन नहीं लगना की समस्या | 55 | 25 | 11.2 | 1 | सार्थक P<0.01 |
| 3 | शिक्षक द्वारा दण्ड देने की समस्या | 48 | 32 | 3.2 | 1 | सार्थक नहीं P>0.01 |
| 4 | पढ़ाई कठिन लगने की समस्या | 60 | 12 | 39.2 | 1 | सार्थक P<0.01 |
| 5 | पढ़ाई का खर्च नहीं उठा पाने की समस्या | 72 | 08 | 51.2 | 1 | सार्थक P<0.01 |
| 6 | पाठ्यवस्तु समझ न आने की समस्या | 53 | 27 | 8.4 | 1 | सार्थक P<0.01 |
| 7 | शिक्षा की सभी सुविधायें उपलब्ध न होने की समस्या | 49 | 31 | 4.05 | 1 | सार्थक नहीं P>0.01 |
| 8 | अध्ययन के लिए पर्याप्त समय की समस्या | 62 | 18 | 24.2 | 1 | सार्थक P<0.01 |

## परिणाम एवं विश्लेषण

प्रस्तुत शोध में भिलाई शहर के बाल श्रमिक विद्यालयों की 80 बाल श्रमिक विद्यार्थियों का यादृच्छिक रूप से चयन करके उनका आंकड़ा, संग्रहण, गणना एवं विश्लेषण करने से क्रमशः ज्ञात होता है किः–

- प्रथम समस्या शाला दूर की समस्या का काई स्क्वायर का मान 4.05 है, जो 0.01 विश्वास स्तर से कम पाया गया। अतः छात्रों के उत्तरों में सार्थक अंतर नहीं है।
- द्वितीय समस्या पढ़ाई में मन नहीं लगने की समस्या का काई स्क्वायर 0.05 है, जो 0.01 स्तर से अधिक पाया गया। अतः छात्रों के उत्तरों में सार्थक अंतर है।
- तृतीय समस्या शिक्षक द्वारा दंड देने की समस्या का काई स्क्वायर मान 3.2 है, जो 0.01 विश्वास स्तर से कम पाया गया। अतः छात्रों के उत्तरों में सार्थक अंतर नहीं है।

- चतुर्थ समस्या पढ़ाई कठिन लगने की समस्या के लिए काई स्क्वायर का मान 39.2 है, जो 0.01 विश्वास स्तर से अधिक पाया गया। अतः छात्रों के उत्तरों में सार्थक अंतर है।
- पंचम समस्या पढ़ाई का खर्च नहीं उठा पाने की समस्या के लिए काई स्क्वायर का मान 51.2 है, जो 0.01 विश्वास स्तर से अधिक पाया गया। अतः छात्रों के उत्तरों में सार्थक अंतर है।
- षष्ठम समस्या पाठ्यवस्तु समझ ना आने की समस्या के लिए काई स्क्वायर का मान 8.4 है, जो 0.01 विश्वास स्तर से अधिक पाया गया। अतः छात्रों के उत्तरों में सार्थक अंतर है।
- सप्तम समस्या शिक्षा की सभी सुविधा उपलब्ध ना होने की समस्या के लिए काई स्क्वायर का मान 4.05 है, जो 0.01 विश्वास स्तर से कम पाया जाता है। अतः छात्रों के उत्तरों में सार्थक अंतर नहीं है।
- अष्टम समस्या अध्ययन के लिए पर्याप्त समस्या के लिए काई स्क्वायर का मान 24.2 है, जो 0.01 विश्वास स्तर से अधिक है। अतः छात्रों के उत्तरों में सार्थक अंतर है।

## निष्कर्ष

लघु शोध में यह निष्कर्ष पाया गया कि बाल श्रमिक विद्यार्थियों में शैक्षिक समस्या पायी गयी है। घर से साला दूर की समस्या, शिक्षक से दंड देने की समस्या, शिक्षा की सभी सुविधाएं संबंधित समस्या नहीं पायी गयी है, जबकि पढ़ाई में मन नहीं लगता की समस्या, पढ़ाई कठिन लगने की समस्या, पढ़ाई खर्च से संबंधित समस्या, शिक्षक द्वारा पढ़ाई गई पाठ्यवस्तु समस्या एवं पढ़ाई के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाने की समस्या बाल श्रमिक विद्यार्थियों में पायी गयी है।

## संदर्भ सूची

1. अंतराष्ट्रीय श्रम संगठन (1992), विश्व श्रम प्रतिवेदन दिवस।
2. बादीवाला मितेरूा (1998), भारत में बाल श्रमिक कारण, सरकारी नीति और शिक्षा की भूमिका।
3. भारतीय आधुनिक शिक्षा (1999), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र।
4. देशपाण्डे आर.वाय. (1996), भारत में बाल श्रमिक (कानूनी प्रावधान)।
5. देवी आर. (1985), प्रिवलेंस ऑफ चाइल्ड लेबर इन इंडिया, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस, मुंबई।
6. ह्नमाडे राघवेन्द्र (2014), बाल श्रमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्या का अध्ययन।
7. कपिल एच.के. (2006), विश्व विधियॉ (व्यवहारपरक विज्ञानों में), कचहरी घाट, आगरा।
8. मिश्रा उर्मिला (1992), बाल श्रमिकों की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएं, भिलाई क्षेत्र के संदर्भ में।
9. मुरलीधरन आर. (1976), बाल श्रमिकों की अनिवार्य शिक्षा, समाज कल्याण।
10. पाठक पी.डी. (2007–2008), *शिक्षा मनोविज्ञान,* अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
11. रूहेला सत्यपाल (1989), *भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र,* राजस्थान ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
12. सरीन एण्ड सरीन (2005), *शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

––==00==––